कैसी हो हमारी दीपावली...?

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

कार्तिक की अमावस्या को भारतवर्ष के घर-घर में प्रकाश दीप जगमगा उठते हैं और बाल-वृद्ध आनन्द से भर जाते हैं। सभी अपने-अपने घरों की तथा कपड़ों की सफ़ाई करते हैं। व्यापारी वर्ग इस शुभ दिवस पर पुराने खाते बन्द कर नया खाता खोलते हैं। मान्यता है कि धन की देवी श्री लक्ष्मी इस रात्रि में भ्रमण करती हैं और अलौकिक गृहों को धन-धान्य से परिपूर्ण कर देती हैं। अपने भाग्य की परीक्षा लेने के लिए लोग जुआ भी खेलते हैं। रात्रि के अन्तिम प्रहर में माताएं सूप की कर्कश ध्वनि से दरिद्रता को निकालती हैं तथा गाँव के बाहर सामूहिक रूप से उसे जला देती हैं।

क्या आपने कभी विचार किया है कि श्री लक्ष्मी के स्वागत के लिए प्रति वर्ष दीपमाला जलाकर भी भारतवर्ष क्यों दरिद्र हो गया है? जगमगाते दीपों को देखकर भी श्री लक्ष्मी हमसे क्यों रूठ गयी हैं? जलते हुये दीप उनको आकृष्ट क्यों नहीं कर पाते? वे कौन-सा दीप जलाना चाहती हैं? वस्तुत: आत्मा ही सच्चा दीपक है। विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। मनुष्य की अन्तरात्मा तमसाच्छन्न है। ऐसे विकारी मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन कैसे हो सकता है? लेकिन कितनी विडम्बना है कि आत्म-दीप प्रज्वलित कर कमल पुष्प सदृश्य अनासक्त बन कमलाशीन श्री लक्ष्मी का आह्वान करने की जगह हम मिट्टी का दीप जलाकर बच्चों का खेल खेलते रहते हैं। मन-मंदिर की सफ़ाई की जगह हम बाह्य सफ़ाई से ही खुश हो जाते हैं। तभी तो श्री लक्ष्मी हमसे रूठ गयी हैं। कमल सदृश्य बन हम कमला को प्राप्त कर सकते हैं।

अमावस्या की रात्रि की तरह आज चतुर्दिक घोर अज्ञान अंधकार छाया हुआ है। कहीं कुछ सूझ नहीं रहा है। मत-मतान्तर के जाल में मानव भ्रमित है। सभी आत्माओं की ज्योति आज बुझ चुकी है। ऐसे समय में सदा जागती ज्योति निराकार परमपिता परमात्मा शिव आत्माओं की ज्योति जगाने के लिए कल्प पूर्व की भाँति इस धराधाम पर अवतरित हो चुके हैं और प्राय: लोप गीता ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। निर्विकारी बन सदा उस जागती ज्योति से अपनी आत्मा का दीपक जगा कर ही हम सच्ची दीपावली मना सकते हैं। तब ही इस देव-भूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना होगी जहाँ रत्न जड़ित स्वर्ण महल होंगे और घी-दूध की नदियाँ बहेंगी। इस युगान्तकारी घटना की पावन स्मृति में ही हम दीपावली का त्योहार मनाते हैं। इस अवसर पर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक एक बड़ा दीप जलाया जाता है और उसी से ही अन्य दीपकों की ज्योति जलाई जाती है। अन्य किसी देवता के मंदिर में सदा दीप नहीं जलता, लेकिन आज भी भगवान विश्वनाथ के मंदिर में अनवरत दीप जलता रहता है क्योंकि एक मात्र निराकार परमात्मा शिव ही सदा जागती ज्योति हैं।

निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा प्राप्त कर जब हम निर्विकारी बनते हैं तो हमारा एक नया जन्म 'मरजीवा जन्म' होता है। हमारे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं तथा नये दैवी स्वभाव-संस्कार और सम्बन्ध बनते हैं। इसी की स्मृति में व्यापारी पुराने खाते को बंद कर नया खाता खोलते हैं। अवढ़र दानी, भोलेनाथ भगवान शिव के साथ व्यापार करने वाले आध्यात्मिक साधकों का परम कर्त्तव्य है कि अब वे आसुरी अवगुणों का खाता बंद कर दैवी गुणों की लेन-देन का खाता खोलें जिससे आगामी सतयुगी सृष्टि में वे श्री लक्ष्मी का वरण कर सकें।

दीपावली के आध्यात्मिक रहस्यों को न जानने के कारण आज मनुष्य उसे सामाजिक उत्सव के रूप में ही मनाते हैं और आध्यात्मिक उन्नति से वंचित रह जाते हैं। कहां यह ईश्वरीय जुआ और कहाँ वह स्थूल जुआ जिसके कारण न जाने कितने लोगों को जेल की यातना सहनी पड़ती है।

आइये, अब हम प्रतिज्ञा करें कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन-मंदिर की सफ़ाई कर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव से आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करेंगे, आसुरी अवगुणों और संस्कारों का खाता बंद कर दैवी-गुण सम्पन्न बनेंगे तथा अपने तन-मन-धन को मानव मात्र के आध्यात्मिक उत्थान में लगा देंगे। फिर तो इस पुण्यभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना हो जायेगी जहाँ दु:ख, अशान्ति का नामोनिशान नहीं रहेगा। शेर-बकरी एक घाट पर जल पियेंगे और अखुट धन-सम्पत्ति से नर-नारी मालामाल हो जायेंगे। इतना महान् अन्तर है मिट्टी के जड़ दीप जलाने और चैतन्य आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करने में।

आत्म-ज्ञान का दीप जलायें,
नित्य मनायें प्रभु मिलन।
दिव्य गुणों की दीपावली से,
चमक उठे हर घर-आँगन।। ●

दिल्ली-हरिनगर। सांसद परवेश वर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रश्मि। साथ हैं ब्र.कु. प्रियंका तथा ब्र.कु. नवीन।

जयपुर-सोडाला। भवर लाल,नगर निगम पार्षद,वार्ड नं. 30 को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राखी तथा ब्र.कु. पूजा।

हिराकूद-ओडिशा। हिंदल कंपनी के सी.एस.आर. हेड शिवानंद मोहन्ती को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति।

दिल्ली-लाजपत नगर। जी.एफ.एस. ऑफीसर एस.पी. यादव तथा डिस्ट्रीक्ट जज सुनीता यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चन्दर।

नवरंगपुर-ओडिशा। बी.एस.एफ. के 84वीं बटालियन के कमांडेंट सी.पी. मंगलम को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम।

दिल्ली-पीतमपुरा। एस.एच.ओ. परवीन कुमार को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता। साथ हैं ब्र.कु. कनिका, ब्र.कु. उषा तथा ब्र.कु. प्रतीक।

नोएडा। लक्ष्मी ऑडियो विडियो स्टूडियो में सुपर कैसेड इंडस्ट्रीज़ 'टी सिरीज़' के मालिक दिवंगत गुलशन कुमार की धर्मपत्नी को राखी बांधने के बाद इंडस्ट्री के सभी मीडियाकर्मियों को राखी बांधते हुए ब्र.कु. अदिति। साथ हैं ब्र.कु. परमिंदर।

कोरापुट-ओडिशा। सांसद झिना हिकाका को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. स्वर्णा।

अररिया-बिहार। जेल में रक्षाबंधन का महत्व बताने के पश्चात् कैदी भाइयों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उर्मिला। साथ हैं अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें एवं भाई।

पारलाखमंडी-ओडिशा। पुलिस ऑफीसर्स को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. माला तथा ब्र.कु. गिरीजा।